International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
August- 2017, Volume-4, Issue-4 P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

# गांधी की राजनीति सत्य और अहिंसा का दर्पण

**डॉ0 मनोरमा राय,**
विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग
धर्मेन्द्र सिंह मैमोरियल कॉलिज, अटौला, मेरठ

**सार**
मानव इतिहास में गांधी जी प्रकाशपुंज की भाँति आये थे। उनका जीवन कथनी का नहीं करनी का था, वे उपदेशक नहीं, सत्यशोधक थे। उनके पास किसी वाद को चलाने की फुर्सत नहीं थी, उनके सिद्धान्तों के नाम पर आज जो कुछ है, वह है उनके लेखों और कृतियों में भारतीय जनमानस के परिप्रेक्ष्य में, राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक विचार, जिसे उन्होंने स्वयं के जीवन में व्यवहारिक रूप प्रदान किया।

**प्रस्तावना**
महात्मा गाँधी जी ने किसी नये विचार को प्रतिपादित नहीं किया। गाँधी जी को अपने निष्कर्षों को स्थापित करने के लिये न तो विशेष प्रकार का प्रशिक्षण ही प्राप्त था और न उन्हें स्वयं ही उसमें कोई रूचि थी। उन्होंने शाश्वत सत्य का पाठ विश्व के महान सन्तों एवं मनीषियों से सीखा था। पारम्परिक शिक्षायें और उपदेशों को ही चयनित कर गाँधी जी ने उसे ठोसवत्ता और व्यवहारिकता प्रदान की, नवीन जीवन दृष्टि के साथ। गाँधी जी के विचारों को, शोधों को, दर्शन के मान्य सत्प्रत्ययों के रूप में उपस्थित कर उसे सशक्त दर्शन के रूप में देखा जा सकता है। गाँधी जी विश्व को सत्य एवं अहिंसा के आर्दशों पर चलता हुआ देखना चाहते थे।

भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति इस अभिप्राय को प्राप्त करने का एक साधन मात्र थी। 'गाँधीवाद' जैसे शब्द को वे आपत्तिजनक मानते थे, उनका विचार था– 'गाँधीवाद' नाम की कोई वस्तु नहीं है और मैं अपने बाद कोई सम्प्रदाय छोड़ना नहीं चाहता। मैं कभी इस बात का दावा नहीं करता कि मैंने नया सिद्धांत चलाया है। मैंने शाश्वत सत्यों को अपने नित्य के जीवन और प्रश्नों से सम्बन्ध करने का प्रयास अपने ढंग से किया...

आप लोग इसे गाँधीवाद न कहें, इसमें वाद जैसा कुछ भी नहीं है। दक्षिण अफ्रीका और भारत के जन–आन्दोलन को गाँधी जी ने एक विशिष्ट पद्धति एवं दृष्टिकोण दिया, जो कि इतिहास में सर्वदा नवीन प्रयोग था। इतिहास इस बात का साक्षी है कि सत्य, अहिंसा और प्रेम के आध्यात्मिक अस्त्र से इतना बड़ा युद्ध कभी नहीं लड़ा गया है और न जीता गया है। गाँधी जी ने इसका राजनीति के क्षेत्र में विशाल पैमाने पर प्रयोग किया और उन्हें सफलता मिली।

गाँधी जी ने 'हरिजन' में लिखा था कि – 'मैंने किसी नवीन सिद्धान्त का आविष्कार नहीं किया। मैंने सिर्फ अपनी तरफ से शाश्वत सत्यों को अपने दैनिक जीवन और उसकी समस्याओं में प्रयोग किया है। मेरा सम्पूर्ण जीवन दर्शन, यदि आप इसको दर्शन जैसी बड़ी संज्ञा देना चाहें, मेरे वचनों में है। आपको इसे 'गाँधीवाद' नहीं कहना चाहिये क्योंकि वाद की तरह की कोई चीज यहाँ नहीं है और इसके लिये व्यापक साहित्य या प्रचार की जरूरत नहीं है।' गाँधी जी सत्य के सतत् अन्वेषक थे।

उन्होंने व्यक्ति के प्रचार एवं आत्मशुद्धि, सादगी, सरल जीवन, शारीरिक श्रम तथा ब्रह्मचर्य पर बल दिया। उनकी व्यक्तिगत– दीर्घकालीन–साधना, उनके अपने त्यागमय जीवन तथा सत्य एवं न्याय के प्रति उनकी दृढ़ आस्था से समुत्पन्न आत्मविश्वास था, जिससे कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण प्राप्त करते थे। गाँधी जी ने बुद्धि की अपेक्षा चरित्र को महत्व दिया, मानवीय चरित्र में उदात्त एवं दैवीय अंश की प्रधानता स्वीकार की और आत्मिक बल को सर्वोच्च स्थान दिया। गाँधी जी ने जब भी जीवन में संकट का अनुभव किया अपने आपको बिल्कुल भगवान पर छोड़ दिया और सदैव अपने प्रतिपक्षियों का हृदय विजित करने में सफल होते थे।

विजय का उन्माद और पराजय की निराशा से सदैव वे अपने आत्म विश्वास के बल पर चलते रहें और कर्म के फल को परमात्मा का प्रसाद मानते थे। गाँधी जी की धर्म भावना विभिन्न धर्मों के महान् सन्तों एवं उपदेशों से अनुप्रणित थी।

गाँधी ने धर्म की व्याख्या करते हुए उद्‌गार व्यक्त किया था– 'धर्म से मेरा अभिप्राय औपचारिक रूढ़िगत धर्म से नहीं परन्तु इस धर्म से है जो सब धर्मों की बुनियाद है और उसमें अपने सृजनहार का साक्षात्कार कराता है।' गाँधी जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन स्थापित सामाजिक व्यवस्था को परिवर्तित करने के प्रयत्नों में होम किया। वे ऐसे समाज की स्थापना चाहते हैं, जो सत्य तथा अहिंसा पर आधारित हो जिसमें भय शोषण का स्थान न हो।
उन्होंने स्वराज्य की कल्पना की थी। जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को उसकी आवश्यकता के अनुसार साधन उपलब्ध होगा ओर समाज में ऊँच–नीच की भावना का कोई स्थान नहीं होगा। ग्रामीण जीवन खुशहाल होगा और किसी भी प्रकार के शोषण का शिकार न होगा। गाँधी जी पाश्चात्य सभ्यता की चकाचौंध से दूर रह कर भारतीय संस्कृति का उत्थान चाहते थे।

उनके सपनों का भारत मानव कल्याण से अभिपूरित 'रामराज्य' सदृश्य होगा। गाँधी जी का सत्यप्रयास विश्व मानवता के लिए था। यहाँ किसी जाति–वर्ग के प्रति घृणा का स्थान नहीं है, सबों के लिए सत्य, प्रेम और करूणा ही आदर्श है। वर्तमान संदर्भ में गाँधीवादी मूल्यों का मुखौटा ओढ़कर, गाँधी के नामों की स्तुति कर स्वार्थ– साधन में लिप्त नेतागण जनता को बेवकूफ बना कर शोषण कर रहें हैं, हालाँकि गाँधी और गाँधी के सिद्धान्तों से रत्ती भर का भी सरोकार किसी को नहीं है।

ध्यातव्य है कि शोषण एवं अन्याय से त्राण पाने के लिये गाँधी ने जिस सत्याग्रह के अस्त्र की बात की थी, उसे सत्ता गैरकानूनी घोषित कर देती है। अहिंसा की ढाल गाँधी जी की टूट चुकी है। रोज निहथी, निरीह जनता गोलियों का शिकार हो रही है। आज देश के अधिकांश हिस्सों में गाँधी का जीवनादर्श– सत्य, सत्य वह ढाल बन चुका है, जिसे लेकर सर्वत्र असत्य की लड़ाई लड़ी जा रही है।

गाँधीजी सर्व धर्म सम्भाव के पक्षधर थे किन्तु निहित स्वार्थों के लिये साम्प्रदायिक दंगे, राजनीति के खेल बन चुके हैं। सारा चुनाव जातिवाद और धर्म तथा सम्प्रदाय के नाम पर लड़ा जा रहा है। गाँधी जी हरिजनोद्दार की बात करते थे। आज उन्हीं के देश में हरिजन इस समाज में सबसे उत्पीड़ित है।– 'रिजर्वेशन' के छलावे से उसे फुसलाया जा रहा है।

देश के महान विचारक सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के शब्दों में– 'गाँधी नहीं रहे पर गाँधीवाद घसीटा जा रहा है। सैकड़ों संस्थाएँ उनके नाम पर चल रहें हैं, सरकार उनके नाम पर चल रही है, सत्ता की नमी पौध उनके नाम पर पनपती है। विचारक, दार्शनिक, उनके नाम पर बड़ी–बड़ी व्याख्या करते हैं। उनके सिद्धांतों और आदर्शों की दीप्ति से चकाचौंध फैलते हैं, संसार को चकित करते हैं, और बताते हैं कि गाँधी की राह संसार में सुख की राह है, मानव कल्याण की राह है, विश्व शांति की राह है।

यहाँ इस लेख तकलीफ बयानी का उद्देश्य, किसी सौद्धांतिक बहस में पड़ना नहीं है क्योंकि वह सिद्धांत जो कर्म से न जुड़ सके, पिरामिड में रखी खुबसुरत 'ममी' की तरह होता है।' गाँधी जी ने अपनी निजी जिन्दगी को सार्वजनिक आयाम देकर, अपने दर्शन को जमीन पर उतार कर आखिरी आदमी की लड़ाई लड़ने की कोशिश की। धनी से लेकर सर्वहारा, कृषक से लेकर जमीन्दार, बाबु से लेकर अधिकारी सभी के नेतृत्व का भार उठाया। राजनीतिक जगत में उनका मुकाबला करने वाला अब तक कोई पैदा नहीं हुआ, विश्व में भी तो भी सारे हिन्द के लिए एक वैकल्पिक आर्थिक तंत्र देने वाले महात्मा गाँधी किसी ऐसे नेता को पैदा न कर सके जो उनके सपने को ठोस आर्थिक, राजनैतिक सच्चाइयों में परिवर्तित कर सकता। गाँधी जी अपने मृत्यु के सात दशक पश्चात् भी लोगों के दिमाग में लिखित है, क्योंकि भारत के लिए उसी प्रकार थे– जिस प्रकार गंगा और हिमालय।

महात्मा गाँधी का विचार था कि आधुनिक राष्ट्रों की स्वार्थपरायण नीति, मानवतावाद पर आधारित होनी चाहिए। महात्मा गाँधी ने उपयोगितावाद को राज्य का लक्ष्य न मानते हुए सभी के कल्याण के लिए विचार का पोषण किया। गाँधी जी का कोई व्यक्तिगत, क्रमबद्ध पृथक दर्शन नहीं है। उनकी आत्मकथा एवं विभिन्न समयों पर दिये गये उनके व्याख्याणों से ही उनके विचारों को समझा जा सकता है।

गाँधी केवल इस युग के महान व्यक्ति नहीं थे अपितु उनका स्थान इतिहास के उन समादरणीय महापुरुषों में है जिन्होंने अपनी कर्तव्यनिष्ठा एवं आदर्शवादिता से सम्पूर्ण मानवता को प्रेरित किया। डॉ धीरेन्द्र मोहन दत्त ने ठीक ही लिखा है कि– 'आस्था एवं संकल्प के कारण गाँधी जी एक साधारण व्यक्ति से कोटि–कोटि लोगों के मसीहा बन गये। सत्य और

अहिंसा के माध्यम से उन्होंने जो कुछ किया वह सब आधुनिक युग में चमत्कार जैसा लगता है। उनके सुन्दर किन्तु अपूर्ण कार्यों को पूर्ण करने की जिम्मेवारी विश्व के सभी स्त्री–पुरुष पर और विशेष कर पौरूष और अभिक्रम से पूर्ण विश्व की युवा पीढ़ी पर है, जो विश्व का नैतिक नेतृत्व कर सके।

यह नैतिक नेतृत्व किसी पर जबरदस्ती नहीं लादा जाता।' गाँधी ने केवल स्वतंत्रता संग्राम अपितु नैतिक संग्राम के सर्वश्रेष्ठ नायक, कोटि–कोटि मूल जनता के प्रति कठिन राजनीतिक–संघर्षों के अग्रणी नेता के रूप में एक संत थे या राजनीतिज्ञ– इस प्रश्न का उत्तर अनेक प्रकार से दिया गया है, किन्तु सत्य तो यह है कि गाँधी ने धर्म और नीति का आचरण करते हुए, अपनी कथनी और करनी में सांमजस्य स्थापित करते हुए, एक सच्चे इंसान की जिन्दगी जीने की कोशिश की, स्वंय को सत्यशोधक कहा – उनका स्वरूप संतत्व प्रधान राजनीतिज्ञ का था। गाँधी ने अपने जीवन में जो कुछ किया वह सत्य के प्रयोगों के ही रूप थे। उनकी राजनीति प्रचलित अर्थों वाली राजनीति से बहुत कुछ भिन्न है। गाँधी की राजनीति सत्य और अहिंसा के दर्पण में देखा जा सकता है।

गाँधी जी ने जो कहा उसे अपने जीवन में उतार कर दिखाया, शाश्वत् मूल्यों को अपने जीवन में चरितार्थ करने का हर संभव प्रयास किया। उनका सारा जीवन सत्य और ज्ञान से प्रकाशित रहा। धर्म का उद्देश्य उन्होंने मानव सृष्टि के उदय का मार्ग– प्रशस्त करना बताया। सत्य–अहिंसा–अभय आदि के महत्व पर प्राचीन काल के सच्चे प्रेमी एवं अनेक लोगों ने जो बल दिया था, उसी को गाँधी ने अपनी अकृत्रिम भाषा में व्यक्त कर दिया।

## निष्कर्ष

गाँधी एक दार्शनिक भी थे, यह बात अलग है कि उन्होंने स्वयं को कभी दार्शनिक नहीं स्वीकार किया है, हालाँकि दर्शन के प्रयोजन को उन्होंने माना है, और कहा है कि दर्शन का प्रयोजन है कर्म की प्रेरणा ग्रहण करना आत्मा की स्थिरता और शुद्धि प्राप्त करना। ध्यातव्य है कि कर्म की श्रेष्ठता को स्वीकार करते हुए गाँधी का दर्शन तर्को की बारीकियों में उलझा हुआ नहीं है, राह चलता हुआ अनपढ़ आदमी भी उसे समझ सकता है। गाँधी जी का आर्थिक दर्शन भौतिकवाद से कहीं अधिक मानवीय मूल्यों की संवेदना से जुड़ा है। उनका विचार था– 'मनुष्य का विचार सर्वोपरि है।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय सिद्धान्त, रमन बिहारी लाल, पृष्ठ–321, मेरठ प्रकाशन, 22014
2. मसीह पाश्चात्य दर्शन का समीक्षात्मक इतिहास, प्रकाशक, नरेन्द्रप्रकाश जैन, मोतीलाल बनारसीदास, जैन, दिल्ली पंचम संस्करण 2004
3. शर्मा चन्द्रधर, भारतीय दर्शन, आलोचना और अनुशीलन, प्रकाशक, नरेन्द्रप्रकाश जैन, मोतीलाल बनारसीदास, जैन, दिल्ली, 2012
4. जार्ज टामस वहाइट पैट्रिक दर्शनशास्त्र का परिचय, प्रकाशक, हरियाणा साहित्य अकादमी,चण्डीगढ़, 2013
5. डेल कारनेगी लोक व्यवहार, प्रकाशक, मंजुल पब्लिशिंग हाउस प्रा.लि., 2011
6. प्रकाश दया रस्तौगी, आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन, प्रकाशक, साधना प्रकाशन मेरठ, 2009
7. लाल बसन्त, समकालीन पाश्चात्य दर्शन, प्रकाशक, नरेन्द्र प्रकाश जैन, मोतीलाल जैन बनारसीदास, नई दिल्ली, चतुर्थ संस्करण 2005
8. पाठक, पी0डी0 व जी0एस0डी0त्यागी : "शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त", विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–282002, 2012
9. पाण्डेय आर0 एस0 : "भारतीय शिक्षा के विभिन्न आयाम" विनाद पुस्तक मन्दिर, आगरा–282002, 2014
10. पचौरी गिरीशः : प्रथम संस्करण, "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक" इन्टरनैशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ–250001, 2016